रामकुमार

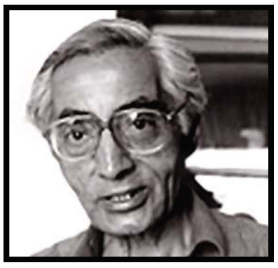

प्रख्यात चित्रकार और लेखक रामकुमार का जन्म सन् 1924 में शिमला में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा शिमला में ही हुई । सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अर्थशास्त्र में उन्होंने एम० ए० किया । इसी दौरान उन्होंने प्रख्यात चित्रकार शैलोज मुखर्जी (शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट) से चित्रकला की शिक्षा ली । अपनी चित्रकला की शिक्षा को विस्तार देने के लिए वे 1949 में पेरिस गए और 1952 तक वहाँ रहे । उन्हें 1972 में पद्मश्री सम्मान और 1985 में प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान समेत अबतक अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं ।

रामकुमार की कृतियों के नाम हैं : **उपन्यास** - 'घर बने घर टूटे', 'देर सबेर'; **कहानी संग्रह** – 'हुस्ना बीबी तथा अन्य कहानियाँ', 'एक चेहरा', 'समुद्र', 'एक लंबा रास्ता', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'दीमक तथा अन्य कहानियाँ', 'झींगुरों का स्वर' आदि; **रिपोर्ताज** – 'यूरोप के स्केच'; **अनुवाद** – 'वार्ड नं० छह' (चेखव के बहुचर्चित लघु उपन्यास का हिंदी अनुवाद), 'अपनी छाया' (ऑस्कर वाईल्ड के उपन्यास 'द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' का हिंदी अनुवाद) ।

रामकुमार के साहित्य में निम्नवर्गीय कस्बाई जीवन गहरी अनुभूति और संवेदना के साथ व्यक्त हुआ है । उनके साहित्य में भावुकता और बड़बोलेपन के लिए कोई स्थान नहीं है । वे मानवीय संबंधों के छीजन और संत्रास को विश्वसनीयता के साथ पाठकों के सामने पेश करते हैं । रामकुमार का कथाकार यायावरी और चित्रकला से समृद्ध हुई उस भावभूमि पर मिलता है जहाँ विस्तृत अनुभव संसार है और मानवीय गरिमा को कभी न आहत करने वाली दृष्टि ।

प्रस्तुत पाठ 'टॉल्सटाय के घर में' उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'यूरोप के स्केच' से संकलित है । वे सन् 1949 में चित्रकला का अध्ययन करने के लिए पेरिस गए थे । उन्हीं दिनों जब कभी मौका लगा, उन्होंने इटली, डेनमार्क, जर्मनी, पोलैंड, लंदन, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों की यात्रा की । 1955 ई० में जब प्राग में उनके चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित हुई तब उन्हें दूसरी बार यूरोप यात्रा का अवसर मिला । इस बार उन्होंने पेरिस के अलावा सोवियत संघ, फिनलैंड, ऑस्ट्रिया, हंगरी आदि देशों की यात्राएँ कीं । 'यूरोप के स्केच' में उन्हीं यात्राओं के रिपोर्ताज हैं । एक निरुद्देश्य यात्री की तरह घूमते हुए जो कुछ देखा, महसूस किया, उन्हीं स्मृतियों को उन्होंने इस पुस्तक में सँजोया है । इन रिपोर्ताजों में तत्कालीन यूरोप की साहित्यिक-सांस्कृतिक जगत् की तस्वीरें हैं तो दूसरे विश्वयुद्ध के कारण उत्पन्न बिखराव से बाहर निकलने की कोशिशों की मार्मिक छवियाँ भी दर्ज हैं । 'टॉल्सटाय के घर में' में लेखक ने टॉल्सटाय को स्मरण करते हुए उनके जीवन की कभी न भुला पाने वाली यादों की एक झाँकी प्रस्तुत की है । लेखक के लिए टॉल्सटाय के घर की यात्रा तीर्थयात्रा की तरह है ।

टॉल्सटाय के घर में

आकाश गहरे नीले रंग का था और बिखरी धूप में मॉस्को की चमचमाती सड़कों पर उजले हरे रंग के पेड़ों और सड़कों पर टहलते लोगों की परछाइयाँ अजीब-अजीब-सी आकृतियाँ बना रही थीं । लोगों में एक प्रकार का उल्लास था क्योंकि मॉस्को में धूप के दिन अधिक देर तक नहीं टिकते ।

सुबह नाश्ता करके मैं अपने एक रूसी मित्र यूरा के साथ एक बड़ी-सी कार में यासनाया पोलयाना के लिए रवाना हो गया । यासनाया पोलयाना के विषय में कब पहली बार पढ़ा था सो अब याद नहीं, लेकिन जब-जब 'आना करीनिना' और 'युद्ध और शांति' पढ़ा तब-तब इस अजीब से अनजाने स्थान की ओर आकर्षण बढ़ा । टॉल्सटाय की जीवनी में भी इस स्थान का विचित्र-सा वर्णन पढ़कर कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन में इस स्थान को देखूँगा । कार में बैठकर भी मुझे विश्वास नहीं हो सका कि मैं उस महत्त्वपूर्ण स्थान पर जा रहा हूँ, जहाँ विश्व साहित्य की अमर कृतियाँ लिखी गई थीं, जहाँ आना का चरित्र कागज पर उतरा था, जहाँ 'युद्ध और शांति' के कितने ही सजीव चित्र रचे गए थे । प्रसन्नता के साथ-साथ एक प्रकार का भय भी मेरे मन में समा रहा था कि कैसे वह सब मैं अपनी आँखों से देख सकूँगा, कैसे उस वातावरण के साथ अपने आपका समन्वय कर पाऊँगा ।

कार 70 मील की रफ्तार से भागी जा रही थी, सड़क के दोनों ओर हरे और गहरे पीले रंग के लहलहाते खेत सूरज की रोशनी में चमक रहे थे । कार में लगे रेडियो में न जाने किस संगीतकार के स्वर धीमे-धीमे गूँज रहे थे । रात में कम सोने के कारण यूरा सीट पर सिर टिकाए सो रहा था और मैं खुली खिड़की से बाहर के दृश्य देख रहा था परंतु मन में यासनाया पोलयाना की बात सोच रहा था । आज न जाने हृदय के कौन-से कोने में से बार-बार नताशा, लेविन, आंद्रे, डाली के धुँधले-धुँधले चित्र मेरी आँखों के सामने घूमे जा रहे थे और मैं कोशिश करने पर भी उन्हें अपने से दूर नहीं कर पा रहा था ।

छोटे-छोटे गाँव, छोटे-छोटे शहर पीछे छूटे जा रहे थे और रेडियो से प्यानो, बायलिन, मैंडोलिन के स्वर हृदय के सब सोए भागों को एक-एक करके जगा रहे थे । 150 मील की यात्रा हमने तीन घंटों में पूरी की और हम यासनाया पोलयाना के बड़े फाटक पर जा पहुँचे ।

लगभग सौ डेढ़ सौ घरों के एक छोटे-से गाँव के सिरे पर टॉल्सटाय का घर है जिसके चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए बाग-बगीचे हैं । पास ही एक तालाब है जिसके किनारे टॉल्सटाय

घंटों जाकर बैठे रहते थे । आजकल इस मकान को सरकार ने म्यूजियम बना दिया है जिसमें टॉल्सटाय का सब सामान तरतीबवार सजा हुआ है । छुट्टी न होने पर भी उस दिन वहाँ लगभग 1,000 पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे म्यूजियम देखने आए हुए थे ।

म्यूजियम के डायरेक्टर ने हमारे साथ एक ऐसे व्यक्ति को कर दिया जो टॉल्सटाय के सेक्रेटरी रह चुके थे और अब उनकी अवस्था 70 वर्ष के लगभग थी, परंतु उनकी मुद्रा को देखकर ऐसा जान पड़ा मानो टॉल्सटाय की चर्चा करते समय अब भी वह स्वर्गीय सुख अनुभव करते हों ।

''यह वह पेड़ है जिसकी छाया में बैठकर टॉल्सटाय किसानों को पढ़ाया करते थे, इस झोंपड़ी में रेपिन रहा करते थे, जब कभी टॉल्सटाय के चित्र बनाने वह यहाँ आते थे... यहाँ टॉल्सटाय के घोड़े रहते थे । टॉल्सटाय ने अपनी माँ द्वारा लगाए गए बाग और पेड़ों की बड़ी सावधानी के साथ रक्षा की क्योंकि जब वह ढाई वर्ष के थे तभी उनकी माँ मर गई थी परंतु टॉल्सटाय कभी आजीवन उन्हें भूल नहीं सके थे....'' हमारे गाइड धीरे-धीरे रूसी भाषा में कहते जा रहे थे और यूरा मेरे लिए अनुवाद करता जा रहा था ।

छोटी-छोटी पगडंडियाँ बरसाती नालों की भाँति मकान के इर्द-गिर्द फैले बाग में दूर-दूर तक सिकुड़ी हुई थीं । कदम-कदम पर टॉल्सटाय के जीवन की अनगिनत स्मृतियाँ बिखरी हुई थीं । कहीं कोई लकड़ी का बेंच था जिस पर वह सुबह बैठा करते थे, कहीं कोई पेड़ था जो उन्हें बहुत पसंद था, एक शाखा पर एक घंटा लगा था जिसे खाने के समय बजाकर परिवार के सब सदस्यों को डाइनिंग रूम में आने की सूचना दी जाती थी । धीरे-धीरे हम उस रहस्यमय वातावरण में खोते जा रहे थे ।

बाहर की परिक्रमा समाप्त करके हम उनके घर में घुसे । दरवाजे के भीतर कदम रखते ही सारे शरीर में एक प्रकार की सनसनी-सी दौड़ गई । उनकी जीवनी में पढ़ी कितनी ही घटनाएँ एक-साथ मस्तिष्क में घुड़दौड़ लगाने लगीं ।

एक कमरे में शीशे की आलमारियों में उनके कपड़े टँगे हुए थे, मानो उन्होंने अभी उतारे हों । उनका कोट, पतलून, ओवरकोट, ड्रेसिंग गाऊन, मोजे, लंबे-लंबे रूसी जूते, कमीजें, सब थे । एक कोट के विषय में उनके सेक्रेटरी ने बतलाया कि 'आना करीनिना' के रुपयों से उन्होंने वह कोट खरीदा था । दीवारों पर उनके और उनके परिवार के चित्र टँगे हुए थे । उनकी पत्नी और पुत्री को चित्रकारी का शौक था, उनके बनाए चित्र भी थे ।

यह उनके पढ़ने-लिखने का कमरा था । एक कोने में छोटी-सी मेज और बिना सिरहाने की एक तिपाई रखी हुई थी । मेज पर एक कलम और दवात रखी थी । इस तिपाई पर उन्होंने अपने जीवन का कितना बड़ा भाग बिताया होगा, यहीं बैठकर उन्होंने 'आना करीनिना' और 'युद्ध और शांति' की रचना की होगी, यही कोना उनके मकान का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग था । उनकी सादगी देखकर हृदय विचलित हुए बिना नहीं रहा । शेल्फों पर अनगिनत किताबें सजी हुई थीं । वह जर्मन, फ्रांसीसी और अँग्रेजी भी पढ़ लेते थे । उनके पुस्तकालय में 23,000 पुस्तके थीं ।

उनके पास दुनिया के कोने-कोने से पत्र आते थे जिनकी संख्या 20,000 के लगभग है और वह अधिकतर उन पत्रों के उत्तर दिया करते थे ।

यह उनका सोने का कमरा था । खिड़की के पास उनकी चारपाई बिछी हुई थी । दूसरी मंजिल से दूर तक फैले हुए खेत, गाँव के मकानों की छतें और छोटी-छोटी हरी पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं । उनकी पत्नी के सोने का कमरा अलग था क्योंकि अंतिम वर्षों में आपस में खटपट रहने के कारण उनके सोने के कमरे अलग-अलग थे । सुबह उठकर कुछ घंटे वह अपनी चारपाई पर बैठकर ही लिखा करते थे । एक अन्य कमरे में एक और मेज भी थी जिस पर टॉल्सटाय की पत्नी पहले उनकी पांडुलिपियों की नकल किया करती थीं और शायद 'युद्ध और शांति' जैसी बड़ी पुस्तक की उन्होंने तीन बार नकल की थी, परंतु बाद में उन्होंने यह सब छोड़ दिया था ।

खाने का कमरा दूसरी मंजिल के एक सिरे पर था । यह बहुत बड़ा था । बीच में एक मेज थी जिसके इर्द-गिर्द 12 कुर्सियाँ रखी हुई थीं । दो बड़े-बड़े प्यानो थे । टॉल्सटाय को संगीत का बहुत शौक था और प्राय: खाने के बाद उनकी लड़की प्यानो पर किसी क्लासीकल संगीतकार का संगीत बजाया करती थी । चारों ओर आरामकुर्सियाँ थीं जिन पर खाने के बाद लोग आराम किया करते थे । दीवार पर रेपिन के बनाए हुए चित्र थे । वह टॉल्सटाय के अभिन्न मित्रों में से एक थे और कितने-कितने दिन आकर उनके पास रहते थे और उनके चित्र बनाते थे । रेपिन के चित्रों को देखकर ऐसा जान पड़ा मानो उन्होंने टॉल्सटाय की आत्मा और उनके हृदय की गहराई को छू लिया होगा जिसका आभास टॉल्सटाय की आँखों से हुआ । इस कमरे का वातावरण अत्यंत सजीव जान पड़ा । आँखों के सामने कल्पना के वे चित्र घूमने लगे जब टॉल्सटाय का परिवार खाने के बाद उस कमरे में जीवन भर देता होगा ।

नीचे की मंजिल में कुछ अतिथियों के लिए कमरे थे । एक उनके डॉक्टर का था जो उनके साथ ही रहता था और अंतिम बार जब सदा के लिए टॉल्सटाय ने अपना घर छोड़ा तो केवल डॉक्टर ही उनके साथ गया था । एक और उनका निजी कमरा था । उनके सेक्रेटरी ने बतलाया कि यह कमरा उन्हें बेहद पसंद था क्योंकि यह घर के शोरगुल से दूर था और यहाँ उन्हें सदा एकांत मिलता था । इस कमरे का बहुत-सा वर्णन उन्होंने 'आना करीनिना' में लेविन के कमरे की चर्चा करते समय किया था क्योंकि लेविन के चरित्र में उन्होंने बहुत कुछ अपनी बातें कही थीं । कमरे की सादगी, बाहर खुलती हुई एक खिड़की, एक चारपाई....बहुत कुछ वही था । एक कोने में पानी भरने का एक बर्तन रखा हुआ था जिसमें टॉल्सटाय अपने अंतिम दिनों में बाहर जाकर कुएँ से स्वयं ही पानी भरकर लाते थे ।

म्यूजियम को देखकर ऐसा जान पड़ा कि जिस व्यक्ति को जीवन में कभी नहीं देखा, जिसकी मृत्यु हुए भी पचास साल के लगभग बीत चुके हैं, उसके जीवन की एक झाँकी, एक धुँधली-सी छाया आज दिखाई दी जिसकी स्मृति शायद कभी धुँधली नहीं पड़ सकेगी । सूने मकान के कमरों में आज भी मुझे आना और लेविन की हल्की-हल्की पदचाप सुनाई दी, वे सब व्यक्ति

शायद इस स्थान को कभी नहीं छोड़ सकेंगे । इस मकान में केवल टॉल्सटाय के जीवन का इतिहास ही नहीं पता चलता बल्कि कितनी ही आत्माओं के स्वर सुनाई देते हैं जिन्हें टॉल्सटाय ने जन्म दिया था ।

जब मकान से बाहर निकले तो हम तीनों ही चुप थे मानो दो घंटों तक कोई स्वप्न देख रहे थे । बाहर तेज धूप निकली हुई थी और कुछ क्षणों के लिए मेरी आँखें उस रोशनी में चौंधिया-सी गईं । लोगों के झुंड इधर-उधर घूम रहे थे । कुछ देर बाद हम टॉल्सटाय की समाधि की ओर बढ़ गए, जो उस घर से दो फर्लांग की दूरी पर थी । पतली-सी सड़क के दोनों ओर विशालकाय हरे-भरे पेड़ों की कतारें आकाश को ढँके हुए थीं । छोटे-छोटे बाग, कहीं फूलों की क्यारियाँ और कहीं ऊबड़-खाबड़ झाड़ियाँ थीं । सेक्रेटरी धीमे स्वर में धीरे-धीरे टॉल्सटाय के विषय में कुछ कह रहे थे परंतु मेरे कानों तक उनका स्वर पहुँच नहीं पा रहा था । चारों ओर उदासी भरा एक सन्नाटा छाया हुआ था ।

समाधि से थोड़ी दूर पहले सड़क पर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा था कि इससे आगे लोगों को चुप रहना चाहिए । समाधि क्या थी, एक छोटा-सा मामूली पत्थर प्रकृति के बीच में पड़ा था जिस पर रंग-बिरंगे फूल सजे हुए थे । अपनी मृत्यु से पूर्व टॉल्सटाय ने अपनी समाधि के विषय में विस्तार से आदेश दिया था कि जैसी निर्धन से निर्धन व्यक्ति की समाधि होती है वैसी ही उनकी भी बने, उनकी मृत्यु पर किसी भी व्यक्ति का भाषण न हो । उसका स्थान भी वह स्वयं ही चुन गए थे । उनकी समाधि के निकट हम झुके और बिना एक भी शब्द कहे हमने उस महान आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की । कहने को कुछ भी बाकी नहीं बचा था । हम दबे पाँव लौट आए ।

बाहर निकलकर अपने डायरेक्टर के साथ एक रेस्तराँ में खाना खाया । म्यूजियम के डायरेक्टर ने बतलाया कि वह वर्षों से टॉल्सटाय के जीवन और उनके कृतित्व का विशेष अध्ययन कर रहे हैं, सामाजिक और वैज्ञानिक रूप से टॉल्सटाय द्वारा चरित्रों, कथानकों आदि का विश्लेषण कर रहे हैं । अपने जीवन के अंतिम वर्ष वह इसी म्यूजियम में व्यतीत करना चाहते हैं ।

हमारी कार फिर तेजी से मॉस्को की ओर रवाना हो गई । रेडियो से फिर संगीत की ध्वनि हमारे कानों तक पहुँचने लगी । शाम की धुँधली रोशनी में पेड़ों की परछाइयाँ लंबी होने लगीं । अतीत की दुनिया से बाहर आकर वर्तमान की ओर हम बहुत तेजी से बढ़े जा रहे थे । सुबह आते वक्त खिड़की से बाहर जिन गाँवों, शहरों और मकानों को देखने में जो मेरी दिलचस्पी थी, वह अब समाप्त हो गई थी । मैंने आँखें बंद कर लीं परंतु यासनाया पोलयाना की दुनिया से अपने-आपको अलग नहीं कर सका ।

मेरी तीर्थयात्रा समाप्त हो गई । पाँच वर्ष पूर्व फ्रांस में रोमाँ रोलाँ का घर देखने के बाद जो भावनाएँ उठी थीं, वही मैं इस समय भी अनुभव कर रहा था । अनुभव करता हूँ कि इस प्रकार की तीर्थयात्रा से कितना उत्साह मिलता है, कितनी प्रेरणा मिलती है ।

अभ्यास

पाठ के साथ

1. टॉल्सटाय ने अपनी अमर कृतियों की रचना कहाँ की थी ?
2. यासनाया पोलयाना के लिए जाते हुए लेखक के मन में कैसा भय समा रहा था और क्यों ?
3. यूरा कौन था ? लेखक की यात्रा के दरम्यान उसकी भूमिका पर प्रकाश डालें ।
4. टॉल्सटाय के परिवार में चित्रकारी का शौक किन्हें था ?
5. रामकुमार के अनुसार टॉल्सटाय के मकान का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग कौन था ? उसका एक संक्षिप्त परिचय दीजिए ।
6. टॉल्सटाय रूसी के अलावा और कौन-कौन सी भाषाएँ पढ़ लेते थे ?
7. टॉल्सटाय ने अंतिम बार जब घर छोड़ा तो उनके साथ कौन गया था ?
8. टॉल्सटाय ने अपने निजी कमरे का चित्रण किस उपन्यास के किस पात्र के कमरे के रूप में किया है ? कमरे की कुछ विशेषताएँ बताइए ।
9. टॉल्सटाय ने अपनी समाधि के विषय में क्या कहा था ?
10. टॉल्सटाय के गाँव का एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करें ।
11. लेखक ने अपनी इस यात्रा को तीर्थयात्रा क्यों कहा है ?

पाठ के आस-पास

1. टॉल्सटाय की किस विशेषता के चित्रण से महात्मा गाँधी की याद आती है ?
2. टॉल्सटाय के अलावा रूस के अन्य प्रमुख कथाकारों तथा उनकी कृतियों के नाम पता करें ।
3. क्या आप जानते हैं कि हिंदी के महान कथाकार प्रेमचंद कहाँ के रहनेवाले थे ? टॉल्सटाय से उनकी क्या समानताएँ थीं ?
4. रोमाँ रोलाँ की प्रमुखतम कृति का नाम पता कीजिए ।
5. अपने शिक्षक से पूछ कर जानिए कि अन्तोन चेखव, मक्सिम गोर्की, लू-शुन और सआदत हसन मंटो किन-किन देशों के रहने वाले थे ?
6. टॉल्सटाय का उपन्यास 'युद्ध और शांति' (वार एंड पीस) क्यों विश्व का महानतम उपन्यास माना जाता है ? इस संबंध में अधिक से अधिक जानकारियाँ जुटाएँ ।
7. हिंदी के उन महान कथाकार-कवियों के नामों का चयन करें जिनके घर को संग्रहालय का रूप देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया जा सकता है ?
8. क्या आप चाहते हैं कि देश-विदेश के महान लेखकों की पुस्तकों का आपके पास अपना संग्रह हो ?
9. आप साहित्यकार को अधिक महान मानते हैं या वैज्ञानिक को या दोनों को ? इसपर एक संगोष्ठी आयोजित कर विचार-विमर्श करें ।

10. क्या आपको पता है कि रामकुमार एक प्रसिद्ध चित्रकार और कहानीकार भी हैं ? उनकी प्रसिद्ध कहानी 'सेलर' कहीं से उपलब्ध कर पढ़ें ।
11. टॉल्सटाय की प्रमुख कहानियों तथा उनके उपन्यासों के नाम की जानकारी प्राप्त करें ।
12. नटाशा, आना, लेविन, आंद्रे, डाली आदि टॉल्सटाय की रचनाओं के प्रमुख पात्र हैं । ये पात्र उनकी किन-किन रचनाओं के हैं ? अपने शिक्षक से जानें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित संज्ञाओं के प्रकार बताइए –
   आकाश, धूप, सड़क, मास्को, उल्लास, आना करीनिना, यासनाया पोलयाना, सूरज, गाँव
2. निम्नलिखित शब्दों के भेद (उद्गम की दृष्टि से) बताइए –
   सुबह, नाश्ता, रूसी, मित्र, मील, घर, निकल, झोंपड़ी, स्मृति, पुरुष, स्त्री, माँ, रक्षा, आत्मा, चारपाई, कुआँ, खटपट
3. निम्नलिखित विशेषणों के प्रकार बताइए –
   चमचमाती, इस, सजीव, सौ डेढ़ सौ, धुँधली, कितना, स्वर्गीय, आजीवन ।
4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करें और संधि-निर्देश करें –
   उल्लास, वातावरण, पुस्तकालय
5. निम्नलिखित शब्दों का सविग्रह समास बताइए –
   आजीवन, रहस्यमय, तिपाई, चारपाई, सजीव, शोरगुल, विशालकाय
6. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –
   (क) लोगों में एक प्रकार का उल्लास था ।
   (ख) कैसे वह सब मैं अपनी आँखों से देख पाऊँगा ?
   (ग) इससे आगे लोगों को चुप रहना चाहिए ।
   (घ) कहने को कुछ बाकी नहीं बचा था ।
   (ङ) इस प्रकार की तीर्थयात्रा से कितना उत्साह मिलता है ?
7. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के प्रकार बताइए –
   (क) पास ही एक तालाब है जिसके किनारे टॉल्सटाय घंटों जाकर बैठे रहते थे ।
   (ख) यह उनके पढ़ने-लिखने का कमरा था ।
   (ग) बाहर तेज धूप निकली हुई थी और कुछ क्षणों के लिए मेरी आँखें चौंधिया-सी गईं ।
   (घ) जब मकान से बाहर निकले तो हम तीनों ही चुप थे मानो दो घंटों तक कोई स्वप्न देख रहे थे ।
   (ङ) उनकी पत्नी के सोने का कमरा अलग था क्योंकि अंतिम वर्षों में आपस में खटपट रहने के कारण उनके सोने के कमरे अलग-अलग थे ।

शब्द निधि

यासनाया पोलयाना : टॉल्सटाय का गाँव
आना करीनिना : टॉल्सटाय का एक उपन्यास
युद्ध और शांति : टॉल्सटाय का सुप्रसिद्ध उपन्यास

रेपिन	:	उन्होंने टॉल्सटाय के अनेक चित्र बनाए थे । वे टॉल्सटाय के मित्र भी थे ।
रोमाँ रोलाँ	:	नोबेल पुरस्कार प्राप्त महान फ्रांसीसी उपन्यासकार । उन्होंने रामकृष्ण परमहंस, गाँधीजी और विवेकानंद की जीवनियाँ भी लिखीं हैं ।
मास्को	:	रूस की राजधानी
आकृति	:	तस्वीर
समन्वय	:	मेल, सामंजस्य
दृश्य	:	जो दिखाई पड़ रहा हो वह प्रसंग या परिवेश
धुँधले	:	अस्पष्ट
प्यानो	:	एक बाजा जो बड़े आकार का होता है और कुर्सी पर बैठकर बजाया जाता है
वायलिन	:	एक तारवाला बाजा
मैंडोलिन	:	तारवाला एक यूरोपीय बाजा
मील	:	दूरी का एक पैमाना जो 1760 फीट का होता है
म्यूजियम	:	संग्रहालय, जहाँ महत्त्वपूर्ण सामग्री संग्रह कर सुरक्षित रखी गई हों
आजीवन	:	जीवनभर